अष्टम माला, खंड 33, अंक 16

शुक्रवार, 27 नवम्बर, 1987
6 अग्रहायण, 1909 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

नौवां सत्र
(आठवीं लोक सभा)

सत्यमेव जयते

(खंड 33 में अंक 11 से 20 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

[अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जाएगी । उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जाएगा ।]

विषय-सूची

अष्टम माला, खण्ड 33, नौवा सत्र, 1987/1909 (शक)

अंक 16, शुक्रवार, 27 नवम्बर, 1987/6 अग्रहायण, 1909 (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन संबंधी उल्लेख	1—6

लोक सभा

शुक्रवार, 27 नवम्बर, 1987/6 अग्रहायण, 1909 (शक)

लोक सभा 11 बजे म० पू० पर समवेत हुई ।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

निधन संबंधी उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मन्त्री जी ।

प्रधान मंत्री (श्री राजीव गांधी) : अध्यक्ष महोदय, आज हम एक विशिष्ट तथा महत्वपूर्ण साथी और एक वरिष्ठ सांसद श्री गिरधारी लाल डोगरा के निधन पर शोक मना रहे हैं । देश, मेरे दल और जम्मू और कश्मीर के लोगों ने विशेष रूप से एक महान नेता खो दिया है ।

डोगराजी युवावस्था में ही राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े थे । उन्होंने जम्मू और कश्मीर में लोकतंत्रीय अधिकारों और राष्ट्रीय तथा धर्म निरपेक्ष ताकतों की पहचान के लिए शेख अब्दुल्ला के साथ मिल कर संघर्ष किया । राज्य के विलय के बाद वह महत्वपूर्ण मंत्री पदों पर आसीन रहे । विधायक और मंत्री के रूप में उन्होंने अपना कार्य निष्ठापूर्वक किया । वह एक सीधे व्यक्ति थे और सभी व्यक्तियों की बात सुनते थे । इससे सभी उनका आदर करते थे ।

उनके परिवारजनों तथा उनके अनेक साथियों और मित्रों के प्रति मैं तथा मेरी पार्टी अपनी सहानुभूति तथा संवेदना प्रकट करती है ।

महोदय, हम अपने भूतपूर्व साथियों श्री नारायण दीन, श्री रामावतार शर्मा और श्री शिव नारायण, जिन्होंने संसदीय कार्य में सक्रिय योगदान दिया, के निधन पर भी शोक व्यक्त करते हैं । मैं उनके परिवारों के प्रति सहानुभूति प्रकट करता हूं ।

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : अध्यक्ष महोदय, अभी हाल ही में डोगरा जी सदन में बहुत उत्साह से नजर आये थे । वह सदन के सदस्य थे लेकिन साथ ही उनके द्वारा दिए गए योगदान का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह था कि वह जम्मू तथा कश्मीर की संविधान सभा के सदस्य थे जिसने भारत के साथ विलय के लिए सहमति व्यक्त की थी । एक तरह से वह कश्मीर की जनता और शेष भारत के बीच एक सेतु थे क्योंकि भारत में कश्मीर के विलय के लिए स्वीकृति दिलाने में उनका हाथ रहा था । मुझे प्राक्कलन समिति में उनके साथ काम करने का अवसर मिला है । हमने प्राक्कलन समिति के सदस्य के रूप में देश के विभिन्न भागों का एक साथ दौरा किया था । हमने देखा कि वह बहुत

कुशल विश्लेषक थे। अपने काम के प्रति उनमें बहुत उत्साह था। इसके अलावा प्राक्कलन समिति की कार्यवाहियों के दौरान उनके जोशीले विचार देखने को मिलते थे।

मैं श्री शिव नारायण को भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। वह अनुसूचित जाति के थे और उन्होंने सदैव उनके हित के लिए कार्य किया। वह एक से अधिक बार इस सदन के सदस्य रहे। जब मैं जनता सरकार में रेल मंत्री था तो उन्होंने रेल राज्य मंत्री के रूप में मेरे साथ काम किया। समाज के पददलित वर्ग सदैव उनसे मैत्रीभाव और मार्गदर्शन प्राप्त करते थे।

दुर्भाग्य से श्री नारायण दीन और श्री राम अवतार शर्मा, जोकि इस सभा के सम्माननीय सदस्य थे, भी आज हमारे बीच नहीं रहे।

महोदय, मैं अपना शोक व्यक्त करता हूं और मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप शोक संतप्त परिवार के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करें।

श्री माधव रेड्डी (आदिलाबाद) : महोदय, मैं डोगरा जी और अन्य सदस्यों के निधन पर सदन के नेता तथा अपने साथी प्रो० मधु दण्डवते द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं से सहमत हूं। अपने दल की ओर से मैं दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : महोदय, मैं सोच भी नहीं सकता कि डोगरा जी इतनी जल्दी हमारे बीच से उठ जाएंगे, क्योंकि कल ही तो मैंने उन्हें देखा था। जीवन के अन्तिम क्षणों तक वह बहुत सक्रिय रहे। जम्मू और कश्मीर की संविधान सभा के सदस्य के रूप में उन्होंने विभिन्न गतिविधियों में सक्रियता से भाग लिया। मैंने देखा है कि वह विभिन्न सामाजिक एवं संसदीय गतिविधियों में सदैव सक्रिय रहते थे। अपने दल की ओर से मैं शोक संतप्त परिवार को हार्दिक संवेदना भेजता हूं। मैं श्री नारायण दीन, श्री राम अवतार शर्मा और श्री शिव नारायण के निधन पर भी शोक व्यक्त करता हूं। मेरा आपसे भी अनुरोध है कि आप शोक संतप्त परिवारों को हमारी संवेदना प्रेषित करें।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (बसीरहाट) : महोदय, मृत्यु ने अचानक इस सदन के एक वरिष्ठ सदस्य को हमसे छीन लिया है। कल मैं यहां नहीं था। लेकिन मुझे बताया गया है कि कल डोगरा जी यहां थे और ठीक-ठाक थे। मैं उन्हें जानता हूं और बहुत सालों से उन्हें इस सदन में देख रहा हूं। वह हमेशा बहुत ही विचारशील थे और मैत्री भाव रखने वाले व्यक्ति थे। वह गंभीर तो थे ही, साथ ही सदन के काम में भी एकदम गंभीर थे। अपनी युवावस्था में वह वामपंथी थे। वह वामपंथी विचारों और आंदोलनों से जुड़े हुए थे और मेरे विचार से जिन विचारों के कारण उन्हें जाना जाता था वे विचार उन्होंने नहीं छोड़े। एक तरह से सत्तारूढ़ दल के एक वरिष्ठ सदस्य के रूप में वह इस सदन के लिए बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। उनके निधन से सत्तारूढ़ दल को और सारे सदन को अपार क्षति हुई है।

उनके तथा अन्य सदस्यों, जिनके लिए हम शोक संतप्त हैं, के निधन पर मैं और मेरा दल शोक व्यक्त करते हैं। मैं श्री शिव नारायण का भी विशेष रूप से उल्लेख करना चाहता हूं जोकि यहां बरसों रहे। वह बहुत लोकप्रिय थे और एक तरह से विनोदी स्वभाव के व्यक्ति थे। सभी उनके सीधेपन का फायदा उठाकर उनका मजाक किया करते थे। कई बार मैंने भी यह अपराध किया है। लेकिन उन्होंने उसे हमेशा मजाक में लिया। एक नियमित और सक्रिय सदस्य होने के अलावा वह वास्तव में एक बहुत अच्छे व्यक्ति थे।

श्री राम अवतार शर्मा और श्री नारायण दीन के निधन से भी हमें बहुत दुःख हुआ है।

मैं अपने दल की ओर से उनके परिवार और परिवार के सदस्यों के प्रति गहरा शोक व्यक्त करता हूं।

श्री पी० कुलनदईवेलू (गोविचेट्टिपालयम) : महोदय, मैं प्रधानमंत्री तथा अन्य माननीय सदस्यों द्वारा व्यक्त की गई संवेदनाओं के साथ अपने आपको संबद्ध करता हूं। हम अपने दल की ओर से शोक संतप्त परिवारों को हार्दिक संवेदनाएं प्रेषित करते हैं।

प्रो० सैफुद्दीन सोज (बारामूला) : अध्यक्ष महोदय, प्रधानमंत्री ने एक महान अनुभवी नेता श्री गिरधारी लाल डोगरा के दुःखद निधन पर जो शोक संवेदनायें प्रकट की हैं मैं उनसे सहमत हूं। मैं अपने दल तथा अपनी ओर से उनके प्रति संवेदनाएं प्रकट करता हूं। उनके निधन से देश को बहुत क्षति हुई है। वह कांग्रेस (आई) दल के थे। लेकिन मैंने उन्हें एक महान राष्ट्रवादी, एक महान देश-भक्त और इससे भी बढ़कर एक अनुशासनित सिपाही के रूप में नजदीक से देखा है।

उनके निधन से जम्मू और कश्मीर राज्य को विशेष रूप से क्षति हुई है, क्योंकि जो लोग श्री गिरधारी लाल डोगरा को नहीं जानते उन्हें मैं बता दूं कि जम्मू क्षेत्र से श्री डोगरा को छोड़कर सरदार बुध सिंह के अलावा और कोई व्यक्ति तानाशाही शासन के खिलाफ तथा जम्मू और कश्मीर राज्य में राष्ट्रवादी तथा समाजवादी विचारों को बढ़ावा देने के लिए शेख मोहम्मद अब्दुल्ला द्वारा लड़ी जा रही लड़ाई में आगे नहीं आया।

कामरेड इन्द्रजीत गुप्त अभी-अभी कह रहे थे कि अपने आरम्भिक दिनों में वह समाजवादी थे। मैं कामरेड इन्द्रजीत गुप्त को बता दूं कि अपनी आखिरी सांस तक श्री गिरधारी लाल डोगरा समाजवादी रहे और भारतीय संविधान में उल्लिखित समाजवादी विचारों वाले थे।

वास्तव में श्री गिरधारी लाल डोगरा के निधन से इस सम्मानित सदन को जो क्षति हुई है उसे बताने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। जम्मू और कश्मीर में, जहां उन्होंने बहुत छोटी आयु में स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लिया था, वह शुरू से ही शेख मोहम्मद अब्दुल्ला के मंत्रिमंडल में रहे और जनाब शेख साहब के मरते दम तक उनके निकट सहयोगी रहे। कुछ मतभेदों के बावजूद श्री गिरधारी लाल डोगरा इस बात पर दृढ़ बने रहे कि नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस दल समीप आए, क्योंकि दोनों दल समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और प्रजातंत्र के हिमायती रहे हैं।

विशेष रूप से मैं यह कहूंगा कि उन्होंने जम्मू और कश्मीर राज्य में कांग्रेस (आई) और नेशनल कांफ्रेंस के गठजोड़ में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। महोदय, मैं आपको यह भी बता दूं कि हाल ही में वह अपने को कुछ संतप्त महसूस करते थे, क्योंकि अप्रत्यक्ष रूप से कुछ चालबाज व्यक्ति जिनको राजनीति में कोई भविष्य नहीं है, इस गठबंधन को कमजोर करने की अभी भी कोशिश कर रहे हैं। और मैं यह कहता हूं कि जम्मू और कश्मीर में इस गठजोड़ को यह एक अपार क्षति है।

मैं उनके निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करता हूं और उनकी मृत्यु से राष्ट्र को विशेष रूप से जम्मू एवं कश्मीर की जनता को हुई अपूरणीय क्षति के प्रति सभी सदस्यों द्वारा व्यक्त किए जा रहे शोक में मैं शरीक हूं।

श्री बलवंत सिंह रामूवालिया (संगरूर) : अध्यक्ष महोदय, मैं श्री गिरधारी लाल डोगरा के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करता हूं। मैं उनके साथ प्राक्कलन समिति में एक साल रहा हूं। मैंने उन्हें हमेशा अनुशासित और विनम्र स्वभाव का पाया। प्रधान मंत्री तथा सदन के नेता द्वारा व्यक्त किए गए दुःख में मैं भागीदार हूं। उन्होंने श्री राम अवतार शर्मा, श्री शिव नारायण और श्री नारायण दीन के निधन पर अपने विचार व्यक्त किए हैं।

मुझे छठी लोक सभा में श्री शिव नारायण के साथ काम करने का अवसर मिला था। वह एक राष्ट्रवादी देशभक्त और लोगों की जन सेवा के प्रति समर्पित थे।

मैं इन नेताओं के निधन पर पुनः गहरा शोक व्यक्त करता हूं।

[हिन्दी]

श्री मोहम्मद महफूज अली खां (ऐटा) : जनाब स्पीकर साहब, मैं अभी जब पार्लियामैंट में आने के लिये घर से चला तो मुझे यह मालूम हुआ कि डोगरा साहब का इन्तकाल हो गया है, लेकिन मुझे बड़ा अफसोस है कि कल शाम को 6 बजे तक वह सामने सीट पर बैठे हुए थे। मेरे एक भाई ने कल उनसे कहा कि हाथी के दांत दिखाने के और होते हैं और खाने के और होते हैं तो मेरे साथी जो काश्मीर के मेम्बर थे, वह बहुत हंसे।

मेरी उनसे मुलाकात यहां सिर्फ वहैसियत मेम्बर पार्लियामैंट के हुई। वह बड़े बुजुर्ग थे, बड़े खुश-अखलाक थे। मैं उनके लिये क्या अलफाज अदा करूं, सिर्फ यही कह सकता हूं कि खुदा उनकी रूह को अच्छी जगह दे। खुदा हाफिज।

श्री पीयूष तिरकी (अलीपुरद्वार) : स्पीकर साहब, मैं प्रधान मंत्री और दूसरे अपने साथियों के साथ अपने आपको सम्मिलित करता हूं, जो कि श्री गिरधारी लाल जी डोगरा, श्री राम अवतार शर्मा और श्री नारायण दीन जो कि इस पार्लियामैंट में हमारे साथी रहे, उन्होंने जो योगदान किया, देश के विषय में सोचा और काम किया, जो कि आज हमारे साथ नहीं रहे हैं, उनके बारे में उन्होंने अपने विचार प्रकट किये।

मैं उनके साथी, परिवार और जितने भी सम्बन्धी हैं, अपने दल की तरफ से और अपनी तरफ से उनसे संवेदनाएं प्रकट करता हूं।

[अनुवाद]

श्री जी० एम० बनातवाला (पोन्नानी) : अध्यक्ष महोदय, अपने दल की ओर से मैं श्री डोगरा के दुःखद निधन पर शोक व्यक्त करता हूं। यह विश्वास ही नहीं होता है कि वह नहीं रहे। हमें अभी भी लगता है कि जैसे वह सदन में ही हैं। हमें अभी भी महसूस होता है कि वह चल रहे हैं, बात कर रहे हैं और चर्चा में भाग ले रहे हैं। पर ईश्वर की इच्छा के आगे तो झुकना ही पड़ता है। हम उनके परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं। अन्य भूतपूर्व सदस्यों के निधन पर भी हम शोक व्यक्त करते हैं।

श्री जार्ज जोसफ मुंडाकल (मुवत्तुपुजा) : अध्यक्ष महोदय, बड़े दुःख की बात है कि हाल के वर्षों में हमारे इतने साथियों का निधन हो गया है। श्री गिरधारी लाल डोगरा का निधन देश के

लिए एक महान क्षति है। वह एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी, प्रशासक तथा सांसद थे। श्री डोगरा जी और सदन के अन्य भूतपूर्व सदस्यों के निधन पर प्रधान मंत्री तथा विपक्ष के नेताओं द्वारा व्यक्त किए गए शोक में मैं शरीक हूं।

अध्यक्ष महोदय, आज भारी मन से हम श्री गिरधारी लाल डोगरा के दुःखद निधन पर अपना शोक व्यक्त करते हैं। वह जम्मू काश्मीर राज्य के ऊधमपुर निर्वाचन क्षेत्र से वर्तमान लोक सभा के सदस्य थे। इससे पूर्व श्री डोगरा 1980-84 के दौरान सातवीं लोक सभा के सदस्य रहे और 23 वर्ष तक अर्थात 1957-1980 तक जम्मू और कश्मीर राज्य की विधान सभा के सदस्य रहे। श्री गिरधारी लाल डोगरा ने अपने राज्य की गहरी लगन और निष्ठा से सेवा की। वह 1948 से 1957 तक 1957 से 1961 तक की अवधि को छोड़कर जम्मू और कश्मीर राज्य की मंत्रि-परिषद के सदस्य रहे और अनेक पदों पर रहे। वह 1951 से 1957 तक जम्मू और कश्मीर राज्य की संविधान सभा के सदस्य रहे और वे इसकी प्रारूप समिति के अध्यक्ष भी रहे।

वह कल यहां उपस्थित थे। वह सदन से सबसे बाद में गए थे और दुर्भाग्य से उनके लिए यह जाना अंतिम जाना ही हुआ। मैं उन्हें इस लोक सभा के सदस्य के रूप में ही नहीं जानता हूं बल्कि काफी समय से जानता था। मैं एक इंसान और मित्र के रूप में उनके बहुत से विशिष्ट गुणों से परिचित था। आज सुबह उनके निधन का समाचार सुनकर वास्तव में बहुत आघात लगा। लेकिन इस मामले में कोई कुछ नहीं कर सकता। हम अपने परम मित्र की मृत्यु से हुई अपूरणीय क्षति को ही महसूस कर सकते हैं।

श्री गिरधारी लाल डोगरा एक सक्रिय संसदविद् थे और उन्होंने संसदीय समितियों के कार्य-करण में गहरी रुचि दिखायी। वह कई वर्षों तक विशेषाधिकार समिति, लोक लेखा समिति और प्राक्कलन समिति के भी सदस्य रहे।

पिछले कुछ सप्ताहों में हमने अपने तीन और भूतपूर्व सदस्यों, अर्थात श्री नारायण दीन (सदस्य, दूसरी लोक सभा), श्री राम अवतार शर्मा (सदस्य, चौथी लोक सभा) और श्री शिव नारायण (सदस्य, छठी लोक सभा) को भी खो दिया है।

श्री नारायण दीन 1957-62 के दौरान उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर निर्वाचन क्षेत्र से दूसरी लोक सभा के सदस्य थे।

वह एक जाने माने सामाजिक कार्यकर्त्ता थे और विभिन्न हैसियत में विभिन्न संगठनों से संबद्ध रहे। उन्होंने पददलित वर्गों के हितों के लिए काम किया तथा समाज में उनके उपयुक्त स्थान के लिए लड़ाई लड़ी। पददलितों में शिक्षा के प्रसार में उन्होंने गहरी रुचि ली और शिक्षा का प्रसार करने के लिए शिक्षा संस्थायें खोलीं।

श्री नारायण दीन का निधन 28 अक्तूबर, 1987 को 72 वर्ष की आयु में लखनऊ में हुआ।

श्री राम अवतार शर्मा मध्य प्रदेश के ग्वालियर निर्वाचन क्षेत्र से 1967-70 के दौरान चौथी लोक सभा के सदस्य थे।

श्री राम अवतार शर्मा ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और 1947 में जेल भी गए। वह एक उद्योगपति के रूप में 1962-63 में मध्य प्रदेश वाणिज्य तथा उद्योग मंडल के उपाध्यक्ष रहे। वह कई सामाजिक तथा धार्मिक संगठनों से भी संबद्ध रहे। उन्होंने कई देशों की यात्रा की और उन्होंने हिन्दी साहित्य में बहुत रुचि ली।

श्री शर्मा का निधन 29 अक्तूबर, 1987 को 80 वर्ष की आयु में ग्वालियर मे हुआ।

श्री शिव नारायण उत्तर प्रदेश के बस्ती निर्वाचन क्षेत्र से 1977-79 के दौरान छठी लोक सभा के मदस्य थे। इससे पूर्व वह 1962-67 और 1967-70 के दौरान तीसरी और चौथी लोक सभा के सदस्य भी रहे। वह क्रमशः 1952-57 और 1958-62 के दौरान उत्तर प्रदेश की विधान सभा और विधान परिषद के सदस्य रहे। 1977-79 के दौरान वह केन्द्रीय मंत्रिपरिषद के सदस्य रहे।

श्री शिव नारायण एक योग्य संसदविद् थे और उन्होंने 1977 में लोक लेखा समिति में काम किया। व्यवसाय से कृषक श्री शिव नारायण ने हरिजनों के उत्थान के लिए भी कार्य किया।

श्री शिव नारायण का निधन 11 नवम्बर, 1987 को 74 वर्ष की आयु में बस्ती से हुआ।

हम इन मित्रों के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं। मुझे विश्वास है कि शोक संतप्त परिवारों को संवेदनाएं व्यक्त करने में सदन मेरा साथ देगा।

अब सदन दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्मान के रूप में थोड़ी देर के लिए मौन खड़ा हो।

(तत्पश्चात् सदस्यगण कुछ देर के लिए मौन खड़े रहे।

अध्यक्ष महोदय : सभा अब सोमवार, 30 नवम्बर, 1987 के ग्यारह बजे म० पू० पर पुनः समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

11.24 म० पू०,

तत्पश्चात् लोक सभा सोमवार, 30 नवम्बर, 1987/9 अग्रहायण, 1909 (शक) के ग्यारह बजे म० पू० तक के लिए स्थगित हुई।

चौधरी मुद्रण केन्द्र, 12/3, श्रीराम मार्ग, मौजपुर, दिल्ली-53